पाठ 29 अध्याय 30 और 31

आज हम निवासस्थान के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन जारी रखेंगेः इसकी साज–सज्जा, तथा प्रभु द्वारा स्थापित किया जा रहा याजकत्व। ये सभी चीज़ें उसके लिए अपने लोगों, इस्राएल के बीच निवास करने का मार्ग बनाने के लिए बनाई गई हैं। आइए हम निर्गमन अध्याय 30 को एक साथ पढ़ें।

अध्याय 30 पूरा पढ़ें।

अध्याय 30 की शुरुआत परमेश्वर द्वारा मूसा को अभयारण्य में दूसरे सबसे पवित्र धुएँ के टुकड़े के लिए निर्देश देने से होती है। इस वस्तु को कई नामों से जाना जाता है लेकिन स्वर्ण वेदी और धूप की वेदी दो सबसे आम हैं।

पूजा के साथ धूप जलाना उस समय की मध्य पूर्वी संस्कृतियों में एक आम प्रथा थी, वास्तव में, उस युग में बलिदान, धूप जलाना और प्रार्थना दुनिया की अधिकांश ज्ञात धार्मिक प्रथाओं के केंद्र में थे, तो क्या इस्राएली इन मानक सांस्कृतिक गतिविधियों को अपना रहे थे जिनसे वे पहले से परिचित थे? कुछ हद तक, हाँ, लेकिन यह पूरी तरह से परमेश्वर का आदेश था कि वे ऐसा करें। यहोवा इंसानों के साथ उन तरीकों से पेश आता है जिन्हें हम समझ सकते हैं और इसलिए वह हमारे स्तर पर हमारे साथ पेश आता है। परमेश्वर के लिए अपने स्तर पर हमारे साथ पेश आना पूरी तरह से असंभव होगा, क्योंकि हम सिर्फ इंसान हैं यह हमारे लिए है कि परमेश्वर हमें जीने और पूजा करने के लिए निर्देश और दिशानिर्देश देता है परमेश्वर ने उन तरीकों का इस्तेमाल किया जो प्राचीन मध्य पूर्वी संस्कृतियों में परिचित और सामान्य थे।

उस दिन के लिए प्रचलित मूर्तिपूजक धार्मिक समारोह और यहोवा ने इस्राएल के लिए जो आदेश दिया था, उसके बीच सबसे बड़ा अंतर यह था कि मूर्तिपूजक अनुष्ठान किसी विशेष देवता की कथित ज़रूरतों को पूरा करने या **संतुष्ट** करने के इर्द–गिर्द घूमते थे। इब्रानी अनुष्ठान उन सभी निर्देशों का पालन करने के बारे में थे जो परमेश्वर ने मनुष्य के लाभ के लिए निर्धारित किए थे। हमें कभी नहीं सोचना चाहिए कि हम जो कुछ भी पूजा–पाठ के तौर पर करते हैं, भले ही वह बाइबिल में हमारे लिए स्पष्ट रूप से आज्ञा दी गई हो, वह परमेश्वर के लाभ के लिए है। उसे कोई ज़रूरत नहीं है और उसे किसी तुष्टिकरण की आवश्यकता नहीं है।

निर्गमन में यहाँ जो आराधना पद्धतियाँ और अनुष्ठान बनाए जा रहे हैं, उनका संदर्भ परमेश्वर द्वारा अपने लोगों पर अपना प्रेम और दया बरसाना, तथा न्याय की एक ऐसी व्यवस्था स्थापित

करना है जिसमें मनुष्य को मुक्ति मिल सके, ताकि परमेश्वर और मनुष्य के बीच मेल–मिलाप हो सके। यह प्रभु द्वारा अपने लोगों को यह सिखाने के बारे में है कि वह कौन है और वह उन्हें क्या महत्व देता है। लोगों को **तब** परमेश्वर के साथ संवाद करने का एक तरीका देने और मानवजाति को **भविष्य** के प्रकाशितवाक्य के लिए तैयार करने के बारे में है जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच स्थायी मेल–मिलाप लाएगा।

धूप की वेदी को उस तरह से बनाया गया था जैसा कि हम अब परिचित हैं, बबूल की लकड़ी के फ्रेम के साथ इसे बनाया गया और फिर सोने से मढ़ा गया। यह लगभग 18″ वर्गाकार और 3 फीट ऊँचा था। बाहरी प्रांगण में स्थित बहुत बड़ी पीतल की वेदी के समान, जिस पर बलि जलाई जाती थी। धूप की वेदी में 4 सींग थे, प्रत्येक कोने पर एक। शीर्ष के चारों ओर एक रिम बनाया गया था, और रिम के नीचे सोने के छल्ले लगाए गए थे ताकि लकड़ी के खंभे डाले जा सकें और स्वर्ण वेदी को आवश्यकतानुसार स्थानांतरित किया जा सके।

इस टुकड़े को पर्दे, परोखेत के सामने रखा जाना था, जो परम पवित्र स्थान को पवित्र स्थान से अलग करता था। इसलिए इसने 2 अन्य सामानों के बीच अपना स्थान ले लिया जो पवित्र स्थान कहे जाने वाले अभयारण्य के उस कमरे में थे, जिनमें से हम पहले ही मेनोरा (गोल्डन लैंप स्टैंड) और शोब्रेड की मेज की जाँच कर चुके हैं। इसे पवित्र स्थान के पश्चिम की ओर रखा गया था, ठीक उसी तरह जैसे वाचा का संदूक परम पवित्र स्थान के पश्चिम की ओर रखा गया था। यह इसके महत्व का संकेत था।

साल में एक बार, धूप की स्वर्ण वेदी को शुद्ध करने के लिए उसके सींगों पर बलि का खून डाला जाता था। अब, धूप की वेदी की सफाई कब हुई, यह निश्चित नहीं है। कोई सोच सकता है कि यह योम किप्पुर पर हुआ होगा, वह दिन जब उच्च पुजारी परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता था और दया आसन पर खून छिड़कता था। मुझे लगता है कि यह उसी दिन हुआ होगा, क्योंकि योम किप्पुर पर प्राचीन लेखन संकेत देते हैं कि उच्च पुजारी धूप की वेदी के संबंध में एक अलग अनुष्ठान करता था।

धूप की वेदी पर लगातार एक विशेष रूप से तैयार की गई धूप जलाई जानी थी। धूप का धुआँ, जो ऊपर की ओर मुड़ा हुआ था, परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं का प्रतीक था। जाहिर है कि वेदी पर धूप और गर्म कोयले डालना, उसे जलाए रखना महायाजक का काम था, हालाँकि चूँकि यह पवित्र स्थान में था (जहाँ नियमित पुजारियों को अनुमति थी) इसलिए नियमित पुजारी

शायद इस वेदी की देखभाल ज़्यादातर समय करते थे, यहोवा ने इस बारे में काफ़ी स्पष्ट किया था कि धूप कब डाली जानी थी; यह उस समय था जब मेनोराह के दीपक की बत्तियाँ काटी जा रही थीं और तेल डाला जा रहा था। यह दिन में दो बार होता था, सुबह और शाम को।

अब, एक चेतावनी भी जारी की गई हैः परमेश्वर द्वारा तैयार की गई धूप के अलावा किसी अन्य प्रकार की धूप का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए, और स्वर्ण वेदी का उपयोग जानवरों की विभिन्न प्रकार की बलि के लिए नहीं किया जाना चाहिए, जिन्हें निर्धारित किया गया है। किसी भी वैकल्पिक धूप के रूप का वर्णन करने के लिए पद 9 में इस्तेमाल किया गया शब्द, इब्रानी में, **केटोरेट ज़ाराह** है। अधिकांश बाइबिल इसका अनुवाद "अजीब" या "अपवित्र" या "विदेशी" के रूप में करेंगे सभी स्वीकार्य अनुवाद। यहाँ एक तरह का दोहरा अर्थ अभिप्रेत है, पहला यह कि जिसे परमेश्वर पवित्र घोषित करते हैं वह पवित्र है, उसके अलावा कुछ नहीं। वास्तविकता यह है कि उस विशेष धूप में इस्तेमाल की गई सामग्री में कोई जादुई गुण नहीं था जब उन्हें उचित अनुपात में एक साथ मिलाया गया और फिर जलाया गया। इसके बजाय, परमेश्वर ने बस इसे पवित्र **घोषित** किया, और इसलिए, बाकी सब कुछ पवित्र नहीं था। यह परमेश्वर के एक सिद्धांत को प्रदर्शित करता है जिसे हमें हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। आप देखिए कि मूर्तिपूजक धर्मों का मानना था कि कुछ खास जमीन, कुछ खास खाद्य पदार्थ, धूपबत्ती या औषधि के कुछ खास फॉर्मूलेशन, कुछ खास जानवर और अन्य वस्तुएं अपने आप में स्वाभाविक रूप से पवित्र और जादुई थीं, परमेश्वर कहते हैं कि कुछ भी अपने आप में पवित्र नहीं है। यह उनका आदेश है कि क्या पवित्र है और क्या नहीं, इसकी घोषणा करें। यह जरूरी नहीं कि यह किसी मानवीय तर्क से मेल खाता हो। उदाहरण के लिए, माउंट सिनाई बाकी पृथ्वी ग्रह की तरह सिर्फ मिट्टी और पत्थर था। लेकिन, जब परमेश्वर वहाँ मौजूद और सक्रिय थे, उन्होंने घोषणा की कि यह पवित्र है क्योंकि उनकी पवित्रता इतनी पारलौकिक है कि यह सचमुच अपने आस–पास मौजूद हर चीज को पवित्रता से संक्रमित कर देती है, और माउंट सिनाई का शिखर उस कारण से मूसा को छोड़कर वस्तुतः अछूता था। जब यहोवा वहाँ माउंट मौजूद और सक्रिय नहीं था, माउंट सिनाई संसार के किसी दूसरे पहाड़ से पवित्र नहीं था। कहीं पर भी हमें सिनाई का सम्मान करने, इसके शिखर से दूर रहने, इसे स्थायी रूप से पवित्र स्थान मानने, या इसकी तीर्थयात्रा करने को नहीं कहा गया है। निश्चित रूप से, मूसा द्वारा 10 आज्ञाएँ प्राप्त करने वाले स्थान पर खड़े होना विस्मयकारी होगा। लेकिन इससे वह स्थान पवित्र नहीं हो जाता। दूसरी ओर, परमेश्वर ने कहा है कि उसने हमेशा के लिए अपने और अपने लोगों के लिए भूमि का एक बहुत ही विशिष्ट टुकड़ा अलग रखा है, इस्राएल। वहाँ पाई जाने वाली मिट्टी, चट्टानें और पत्ते अद्वितीय नहीं हैं। मुझे नहीं पता कि परमेश्वर ने पूरी पृथ्वी में भूगोल

के उस विशेष टुकड़े को इस्राएल के लिए एक विरासत के रूप में अपने लिए अलग क्यों रखा, लेकिन उसने ऐसा किया। जिस तरह से उसने स्वर्ण वेदी के लिए विशेष धूप बनाने का निर्देश दिया था, उसी तरह यह निर्धारित करने के लिए वैज्ञानिक तरीकों या मनुष्य के दर्शन की जाँच करना और लागू करना हमारे लिए नहीं है कि यह क्यों और क्यों वह पवित्र है और कुछ और नहीं है। दुख की बात है कि आज यह बात सामने आ गई है कि अगर परमेश्वर का वचन मनुष्य की बुद्धि के अनुमोदन को पूरा नहीं करता है, तो हम कहते हैं कि वचन में त्रुटि होनी चाहिए। परमेश्वर की यह घोषणा कि क्या है और क्या नहीं है, इसका मनुष्य के तर्क और तर्क के दृष्टिकोण से कोई लेना–देना नहीं है।

केटोरेट ज़राह वाक्यांश के इस दोहरे अर्थ का दूसरा भाग यह है कि चूँकि यह आम बात थी कि अन्य संस्कृतियाँ अपने देवताओं के लिए धूप जलाती थीं, और धूप को एक प्राचीन दुर्गन्धनाशक के रूप में इस्तेमाल करती थीं, इसलिए न केवल उन अन्य धूपों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था, बल्कि यह विशेष पवित्र धूप भी इस्राएल राष्ट्र के बाहर से नहीं आनी थी। वे इसके निर्माण को आउटसोर्स नहीं कर सकते थे। एक बहुत अच्छा आधुनिक शब्द जो **केटोरेट ज़राह** के सार को दर्शाता है, वह है "बाहरी व्यक्ति से धूप''। परमेश्वर दीवार पर एक और परत डाल रहे हैं जिसका उद्देश्य इस्राएल को बाकी सभी से अलग करना था।

उच्च पुजारी को धूप जलाने के लिए एक प्रक्रिया का पालन करना पड़ता था। सबसे पहले, उसे सुबह और फिर शाम को पीतल की वेदी पर पशु बलि देनी पड़ती थी। उसके बाद, उसे पीतल की हौदी (पैर और हाथ) में खुद को अनुष्ठानपूर्वक धोना पड़ता था, जो पानी रखने के लिए एक बड़ा कंटेनर होता है (हम जल्दी ही इस पर आएँगे)। अंत में, उसे धूप की वेदी के पास जाने से पहले पवित्र स्थान में प्रवेश करना पड़ता था।

जब महायाजक ने स्वर्ण वेदी के ऊपर कोयले डाले, तो उन्हें पीतल की वेदी से लिया गया कोयला होना चाहिए था, जहाँ बलिदान चढ़ाए जाते थे। बाद में हम इस शब्द "अजीब आग" के बारे में सुनेंगे, स्वर्ण वेदी पर कोई "अजीब आग" नहीं डाली जानी थी, अजीब आग के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द वही था जिसे हमने अभी–अभी सीखा है, **ज़राह।** तो अजीब आग का शाब्दिक अर्थ "बाहरी" आग था, अजीब आग, अनिवार्य रूप से, पीतल की वेदी को छोड़कर कहीं से भी लिया गया कोयला था जैसे–जैसे हम विशेष रूप से व्यवस्था में आगे बढ़ते हैं, हम तम्बू अनुष्ठानों में आगे की आवश्यकताओं और निषेधों का अध्ययन करेंगे। लेकिन, अभी के लिए, मैं आपको यहाँ स्वर्ण वेदी के संबंध में चित्रित किए जा रहे प्रतीकवाद की एक तस्वीर दिखाता हूँ।

धूप की वेदी के इर्द–गिर्द होने वाले सभी अनुष्ठान यह दर्शाते हैं कि जब हम प्रार्थना में परमेश्वर के पास आते हैं, तो यह उनकी शर्तों पर होता है। हम इसे अपनी मर्जी से नहीं कर सकते। उन्होंने एक मॉडल, एक प्रक्रिया निर्धारित की है, ताकि हम प्रार्थना में उनके पास आ सकें।

तोरह का अर्थ है शिक्षा, या निर्देश। पुजारियों ने जो कुछ भी किया वह लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारे में कुछ न कुछ सिखाना था। स्वर्ण वेदी पर धूप जलाने के मामले में, परमेश्वर सिखा रहा था कि, सबसे पहले, प्रार्थना में उसके पास आने के लिए हमें बलिदान की वेदी पर रक्त के माध्यम से शुद्ध होना चाहिए, जैसा कि महायाजक को करना था। क्रॉस बलिदान की सच्ची वेदी है जिसका प्रतीक पीतल की वेदी है, और यीशुआ वह बलि का जानवर है जो शुद्ध करता है। हमें यीशु ने हमारे लिए जो किया, उसके साथ पहचान करनी चाहिए, ताकि परमेश्वर के साथ संवाद करने में सक्षम होने के लिए पहला कदम के रूप में शुद्ध हो सकें।

दूसरा, हमें पानी के माध्यम से साफ किया जाना चाहिए, जैसा कि उच्च पुजारी ने पीतल के हौद में अपने अनुष्ठानिक स्नान में किया था। मसीह कहते हैं कि वह हमारा जीवित जल है। हमें बताया गया है कि यहोवा के पास जाने से पहले हमें उसके द्वारा साफ किया जाना चाहिए। लेकिन, एक और पहलू भी है, अनुष्ठानिक स्नान हमारे पापों को स्वीकार करने और पश्चाताप करने का भी प्रतीक है। जिस तरह पुजारी अपने पैरों और हाथों से गंदगी और मिट्टी धोते थे, उसी तरह हमें अपने पापों को पीछे छोड़ना होगा यदि हमें सर्वोच्च परमेश्वर के पास जाना है।

इसके बाद, हमें पवित्र स्थान में प्रवेश करना चाहिए। मूसा के दिनों में, पवित्र स्थान एक लेंट था। बाद में यह एक लकड़ी और पत्थर की इमारत होगी जिसे हम मंदिर कहते हैं। लेकिन, आज, पवित्र स्थान हमारे भीतर है, यह वह जगह है जहाँ परमेश्वर की आत्मा निवास करती है। हमें परमेश्वर से मिलने के लिए किसी विशेष स्थान पर जाने या किसी विशेष इमारत में जाने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, विश्वासियों के रूप में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ हम जा सकते हैं जहाँ हम उनकी उपस्थिति में न हों। मूसा के दिनों के पुजारियों को पवित्र स्थान में प्रवेश करना पड़ता था। आज, पवित्र स्थान वास्तव में ..... हम है.यीशु के शिष्य।

अब धूप की वेदी के बारे में एक और बात और हम आगे बढ़ेंगे। मैंने कहा कि यह प्रार्थना का प्रतीक है। कोई आपसे पूछ सकता है कि 'दुनिया में ऐसा कहाँ लिखा है इन अंशों में? खैर, सच में, यह सीधे तौर पर ऐसा नहीं कहता है। हालाँकि, मैं आपको कुछ ऐसा दिखाना चाहता हूँ जो मुझे आशा है कि आपको बाइबिल की एकजुटता और एकता को देखने में मदद करेगा, आगे सबूत कि जंगल का तम्बू परमेश्वर के स्वर्गीय आध्यात्मिक तम्बू का एक सांसारिक भौतिक मॉडल

है, और सबूत है कि धूप का धुआँ वास्तव में प्रार्थना का प्रतिनिधित्व करता है जिसे परमेश्वर को स्वीकार्य बनाया गया है।

प्रकाशितवाक्य 8 निकालें

निर्गमन में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपने पृथक राष्ट्र का निर्माण किया या जैसा कि मैंने अन्य अवसरों पर कहा है, सुसमाचार अधिनियम 1, और प्रकाशितवाक्य में हम उसके पृथक राष्ट्र के अंतिम उद्धार और मानव इतिहास के अंतिम अध्यायों को देखते हैं जैसा कि हम जानते हैं, सुसमाचार अधिनियम 3, अंतिम अधिनियम।

आइए हम प्रकाशितवाक्य 8:1–4 पढ़ें

जब मेम्ने ने सातवीं मुहर तोड़ी, तो स्वर्ग में आधे घंटे के लिए सन्नाटा छा गया। फिर मैंने सात स्वर्गदूतों को देखा जो परमेश्वर के सामने खड़े थे, और उन्हें सात शॉफ़र दिए गए। एक और स्वर्गदूत आया और सोने की धूपदानी लेकर वेदी पर खड़ा हो गया, और उसे सिंहासन के सामने सोने की वेदी पर परमेश्वर के सभी लोगों की प्रार्थनाओं में जोड़ने के लिए बड़ी मात्रा में धूप दी गई। धूप का धुआँ परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं के साथ स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने ऊपर उठा।

मुझे नहीं लगता कि हमें इस बात की चिंता करनी चाहिए कि हम रूपक या चित्रण में लिप्त हो रहे हैं जब हम धूप की वेदी के प्रतीकवाद की बात करते हैं, जो कि परमेश्वर के लोगों की प्रार्थना है कि धूप की गुणवत्ता को जोड़कर पवित्रता की गुणवत्ता परमेश्वर को स्वीकार्य हो गई है और, हम यह भी जान सकते हैं कि स्वर्ग में धूप की एक आध्यात्मिक वेदी मौजूद है।

पद 11 अब अचानक बदल जाता है, और हम देखते हैं कि यहोवा मूसा को जनगणना करने का निर्देश दे रहा है। नई विद्वत्ता ने (कई अच्छे कारणों से) यह निर्धारित किया है कि यह जनगणना पूरी तरह से गिनती अध्याय 1 की जनगणना से अलग है। इस जनगणना से एकत्र किए गए सिक्के अभयारण्य के पदों के लिए सॉकेट बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है हालांकि यह एक बार का है

तोरह में बाद में एक अधिक स्थायी अध्यादेश स्थापित किया जाएगा। हालाँकि, पैसे के **उपयोग** से परे, इसका आध्यात्मिक उद्देश्य एक और बात है।

यह कहना पर्याप्त है कि इस जनगणना के कई कारण हैं। यहाँ निर्गमन में जो कारण दिया गया है, वह यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के लिए फिरौती देनी होती है। फिरौती का

यह विचार परमेश्वर की उद्धार योजना के केंद्र में है। फिरौती का भुगतान ही हमें मुक्ति दिलाता है। हम चर्च के लोग अक्सर मुक्ति और "मुक्ति की योजना" के बारे में बात करते हैं। लेकिन, मुझे नहीं लगता कि हममें से बहुत से लोग जानते हैं कि इसका वास्तव में क्या मतलब है, और न ही यह विचार कहाँ से आया है।

संक्षेप में, यह इस प्रकार है। यहोवा ने एक ऐसी व्यवस्था स्थापित की जिसके तहत प्रत्येक पिता को अपने द्वारा जन्मे पहले पुरुष बच्चे (जिसे औपचारिक रूप से पहला बच्चा कहा जाता है) के जीवन को छुड़ाने के लिए पुरोहित वर्ग को एक निश्चित राशि का भुगतान करना पड़ता था। आम तौर पर, इसे जन्म के 30 दिनों के भीतर चुकाना होता था। इसके अलावा, एक और पहलू या मोचन का प्रकार था जिसमें एक रिश्तेदार छुड़ानेवाला शामिल था। यहाँ विचार एक रिश्तेदार के साथ जुड़ा था जो वास्तव में परिवार के किसी सदस्य की संपत्ति या जीवन को छुड़ाने के लिए जिम्मेदार कर्तव्य–बद्ध था जो कर्ज में डूब गया था, और अपनी संपत्ति खोने वाला था या उसे गुलाम के रूप में बेचा जा रहा था, या दोनों, ऋणदाता को।

अब, जबकि इस प्रणाली का उपयोग इस्राएल के लिए नागरिक कानून के एक रोजमर्रा के व्यावहारिक तत्व के रूप में किया गया था, इसे परमेश्वर ने इस्राएल को एक सिद्धांत **सिखाने** के लिए बनाया था, और वह यह है कि हम, मनुष्य के रूप में, परमेश्वर के कर्ज में पैदा हुए हैं। उसने हमें बनाया। वह हमारा मालिक है। हम कर्जदार हैं, वह लेनदार है। इसके अलावा, आदम और हव्वा के वंशज के रूप में हम पापी के रूप में पैदा हुए हैं, और सभी अधिकारों से, नष्ट हो जाना चाहिए। यदि हमारे जीवन को बख्शा जाना है, तो हमें परमेश्वर के प्रति अपने कर्ज से छुड़ाया जाना चाहिए, क्योंकि उसने हमें उस कर्ज को नष्ट नहीं किया जो पाप का परिणाम है, मोचन मुफ्त नहीं है इसमें हमेशा कीमत चुकानी पड़ती है। कोई भुगतान करता है लेकिन, यह वह व्यक्ति (शिशु ज्येष्ठ) नहीं है जो कर्ज में है, यह पिता है इससे भी अधिक, केवल एक रिश्तेदार के पास मोचन करने का अधिकार और कर्तव्य है एक और पहलू यह है कि ज्येष्ठ का मूल्य शेष बच्चों की तुलना में अधिक होता है।

मैं फिर से कहना चाहता हूँ कि परमेश्वर ने इस व्यवस्था को एक छाया और एक प्रकार के रूप में बनाया जो आने वाला था, ठीक वैसे ही जैसे उसने याजकपद और तम्बू को एक छाया और एक प्रकार के रूप में बनाया जो आने वाला था। यह एक छाया होने के अलावा अपने समय में एक बहुत ही व्यावहारिक उद्देश्य की पूर्ति करता था लेकिन फिर भी, परमेश्वर ने इसे इस तरह से किया ताकि वह मानवजाति को अपने सिद्धांतों की शिक्षा दे सके।

यीशु, यीशु मसीह, वही थे जिनकी ओर छुटकारे की व्यवस्था ने संकेत किया था। सबसे पहले, यह इस्राएल को, फिर हर राष्ट्र को स्पष्ट किया जाना था कि हम सभी को छुटकारे की आवश्यकता है। बचाए न गए संसार के साथ पूरी समस्या यह है कि वे मूल परमेश्वर–सिद्धांत को नहीं समझते हैं कि हम अपने जीवन को, अपने शाश्वत जीवन को छुड़ाने के लिए पैदा हुए हैं, और, यदि हमारे शाश्वत जीवन को छुड़ाया नहीं गया है, तो हम अनंत मृत्यु को भुगतते हैं। हमारे चर्च–भाषण में, हम कहते हैं कि हम सभी को बचाए जाने की आवश्यकता है। यीशु, परमेश्वर के ज्येष्ठ पुत्र, को छुटकारे की कीमत के रूप में दिया गया था जिसे अक्सर उनके ज्येष्ठ राष्ट्र इस्राएल के छुटकारे के लिए फिरौती कहा जाता है।

इसलिए, निर्गमन में यह जनगणना इसलिए है क्योंकि इस्राएल, संसार के सभी राष्ट्रों में परमेश्वर का ज्येष्ठ राष्ट्र है और, एक परिवार के ज्येष्ठ पुत्र के समान, इसे छुड़ाया जाना चाहिए। छुड़ाने की यह प्रथा एक ओर यह संकेत करती है कि इस्राएली लोग वास्तव में परमेश्वर के हैं, वे उसके हैं। वस्तुतः वह उनका स्वामी है, क्योंकि उसने उन्हें परमेश्वर के हर संभव अर्थ में रचा है।

दूसरी ओर, यह दिखाता है कि इस्राएल, यहोवा के लिए अलग रखा गया है, पवित्र बनाया गया है।

ध्यान दें कि प्रत्येक व्यक्ति को इस मामले में आधा शेकेल की राशि का भुगतान करना होगा। छुड़ौती की कीमत के रूप में और, चाहे वह व्यक्ति कितना भी अमीर या गरीब क्यों न हो, कीमत एक ही है। स्वभाविक रूप से, यह हमारे लिए बिल्कुल वैसा ही है। परमेश्वर ने यीशु की कीमत छुड़ौती के रूप में चुकाई ताकि प्रत्येक मनुष्य को अपने अनंत जीवन के लिए उस ऋण से छुटकारा मिल सके जो वह कभी भी जन्म लेता है और चाहे वह राजा हो या गुलाम, अमीर हो या गरीब, पुरुष हो या महिला, काला, भूरा या सफेद चमड़ी वाला, कीमत एक ही है, कोई अतिरिक्त नहीं और कोई विकल्प नहीं। यीशु हमारा रिश्तेदार है जिसे हमें छुड़ाने का अधिकार था, और वह उस छुटकारे की कीमत है।

पद 17 में, यहोवा मूसा को पीतल का हौज बनाने का निर्देश देता है, अर्थात्, एक बड़ा कांस्य पात्र जिसमें पानी रखा जा सके, जिसका उपयोग दिन में कई बार होने वाले धार्मिक स्नान के लिए किया जाएगा। हौज का आकार नहीं दिया गया है, परन्तु इसका आकार इतना अच्छा होना चाहिए कि इसमें सभी आवश्यक पानी रखा जा सके।

जबकि आम इस्राएली पीतल की वेदी पर खड़े होकर जानवरों और पशुओं को भी मार देते थे। उन्हें वहाँ काटकर, केवल पुजारियों को ही कांस्य लेवर का उपयोग करने की अनुमति थी।

हौदी को बलिदान की वेदी (जिसे पीतल की वेदी भी कहा जाता है) और पवित्र स्थान के द्वार के बीच में रखा गया था। यह दिलचस्प है कि निर्माण के बारे में परमेश्वर ने मूसा को बहुत अधिक जानकारी नहीं दी है। लेवर, सिवाय इसके कि इसमें दो टुकड़े होंगे – एक कुरसी, और फिर पानी का कंटेनर जो कुरसी पर बैठा है।

जैसा कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं, हौदी का उद्देश्य स्नान के लिए पानी रखना था। पुजारी को हमेशा पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले स्नान करना पड़ता था। स्नान शुद्धिकरण और पुनर्जन्म का प्रतीक था।

प्रक्रिया के अनुसार, पुजारी लेवर तक जाते थे और अपने दाहिने हाथ को लेवर में डुबोते थे और पहले अपना दाहिना हाथ और फिर अपना दाहिना पैर धोते थे। फिर वे अपना बायाँ हाथ और बायाँ पैर धोते थे, ताकि आपको गलत तस्वीर न मिले, सिर्फ़ उनके हाथ ही पानी में डूबे थे और उन्होंने अपने हाथों से अपने पैर धोए। एक बार फिर, यीशु द्वारा अपने हाथों से शिष्यों के पैर धोने की तस्वीर लें, और, मैं आपको याद दिला दूँ, कि यह प्रक्रिया सिर्फ़ पुजारियों के लिए आरक्षित थी।

इस अध्याय का अगला विषय अनुष्ठानों में उपयोग किए जाने वाले सुगंधित अभिषेक तेल है और सामग्री लोगों द्वारा मंदिर को दिए गए चढ़ावे से नहीं आनी थी। तम्बू, बल्कि इसका खर्च आदिवासी सरदारों को उठाना पड़ता था। इसका एक कारण यह भी है मसालों और इत्र की भारी कीमत जो कि आवश्यक थी। सबसे महत्वपूर्ण सामग्री को अरब, भारत और चीन जैसी लंबी दूरी से लाया जाना था। दुर्लभ और निर्माण में कठिन, इसलिए वे डाकुओं और चोरों के लिए प्रमुख लक्ष्य थे, परिबहन के दौरान काफी मात्रा में, माल अपने इच्छित गंतव्य तक नहीं पहुँच पाया। हमें इस तेल को बनाने वाले मसालों की सूची दी गई हैः लोहबान, दालचीनी, सुगंधित गन्ना, और कैसिया और एक विशेषज्ञ द्वारा सम्मिश्रण के बाद, इसका उपयोग लोगों और अनुष्ठानों को समर्पित करने के लिए किया जाएगा दिव्य सेवा में उपकरण। वास्तव में, इस विशेष मिश्रण के बिना याजकों को प्रभु की सेवा में समर्पित करना संभव नहीं था।

याजकों को प्रभु की सेवा में समर्पित करना

लेकिन पद 31–33 हमें यह भी बताता है कि इस विशेष मिश्रण के लिए केवल यही अनुमति है, कोई भी व्यक्ति इसे प्रशासित नहीं कर सकता है और इसका उपयोग किसी और चीज़ पर नहीं किया जा सकता है। इस आदेश का उल्लंघन करने का परिणाम बहुत गंभीर है, **करेत**। **करेत** का अर्थ है जिसे हम आमतौर पर "कट–ऑफ" के रूप में अनुवाद करते हैं, मैं आपको याद दिला दूँ

कि यहाँ जिस बात पर विचार किया जा रहा है वह परमेश्वर, इस्राएल के समुदाय और स्वयं परमेश्वर से स्थायी रूप से अलग होना है। इसका अर्थ जरूरी नहीं कि शारीरिक मृत्यु हो, जैसे कि निष्पादन हालाँकि यह हो सकता है। यह वास्तव में मुक्ति की आशा के बिना अनन्त धिक्कार के बराबर है। इसलिए **करेत** अधिकांश तरीकों से केवल शारीरिक मृत्यु से कहीं अधिक गंभीर है और इससे बहुत डर लगता था।

अध्याय 30 के अंतिम निर्देश पवित्र धूप के लिए सामग्री के बारे में हैं जिसे धूप की वेदी पर जलाया जाएगा। इसमें 4 तत्व शामिल होने चाहिए – बालसम राल, ओनिचा गैलबनम और लोबान। बालसम एक प्रकार का पेड़ है और इसका घटक मूल रूप से बालसम पेड़ से निकलने वाला रस है। ओनिचा को उतना अच्छी तरह से नहीं समझा जाता है। यहाँ इस्तेमाल किया गया इब्रानी शब्द **शेकलेट** है और जब तक इसका दोहरा अर्थ न हो, यह एक समुद्री जीव मोलस्क को संदर्भित करता है जिससे वे एक सुगंधित पदार्थ निकालते हैं। अगले घटक को गैलबनम कहा जाता है और यह फारस के क्षेत्र में एक पौधे से आता है, और अंत में लोबान मिलाया जाता है। लोबान एक बहुत महँगा सुगंधित गोंद था जो अरब में उगने वाले एक पेड़ से आता है।

इस विशेष मिश्रण का उपयोग केवल स्वर्ण वेदी पर ही किया जाना चाहिए और कभी भी किसी सामान्य तरीके से नहीं किया जाना चाहिए। सामान्य तरीके से मेरा मतलब है कि इसका उपयोग केवल दुर्गंध दूर करने या हवा को मीठा बनाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए, जो कि संपन्न लोगों के बीच इसका सबसे आम उपयोग था। उस दिन कोई भी कल्पना कर सकता है कि हर शिविर, शहर और गाँव में जली हुई बलि, लोगों के साथ रहने वाले जानवरों, वध प्रक्रिया और निश्चित रूप से खुद लोगों की बदबू फैल रही होगी जो नियमित रूप से स्नान नहीं करते थे।

आइये निर्गमन अध्याय 31 पर चलते हैं

निर्गमन अध्याय 31 पूरा पढ़ें।

मूसा अभी भी माउंट सिनाई के शिखर पर है, वह अध्याय 24 की शुरुआत से ही वहाँ है, और कई दिन बीत चुके हैं। कुल मिलाकर, वह वहाँ 40 दिन तक रहेगा। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि मूसा के भीतर क्या परिवर्तन हो रहा था, इतनी शुद्ध पवित्रता की उपस्थिति में। मैंने कितनी बार एक ईसाई नेता को यह कहते सुना है कि हम उस रहस्य का उत्तर तब तक नहीं जान सकते जब तक हम परमेश्वर के सामने खड़े न हों। मूसा परमेश्वर के सामने खड़ा था, और वह जो ज्ञान और समझ प्राप्त कर रहा था, वह मन को झकझोर देने वाला था। मूसा ने उस पर्वत

पर चढ़ते समय अपने मन में जो प्रश्न बनाए होंगे, वे निजी और गहरे छिपे हुए संदेह, आशंकाएँ और चिंताएँ थीं, इन और बहुत सी बातों को संबोधित किया गया होगा और उत्तर दिया क्योंकि, प्रत्येक बार के बाद एक अलग मूसा उस पहाड़ से नीचे आया था जब वह ऊपर चला गया।

अब जबकि परमेश्वर की उपस्थिति में मूसा का समय समाप्त होने वाला है, और अन्तिम कुछ निर्देश दिए जा रहे हैं, मूसा को तम्बू के लिए दिया जा रहा है यहोवा विशेष रूप से उस व्यक्ति का नाम बताता है जिसे परमेश्वर ने जो कुछ बनाने का आदेश दिया है, तंबू के लिए, उसका मुख्य डिज़ाइनर और निर्माता बनें।

जबकि बहुत सारे विवरण दिए गए हैं, बहुत सारे नहीं दिए गए हैं। कौन तय करेगा कि करूब कैसा दिखता है? पानी का कांस्य हौदी कितना बड़ा होना चाहिए, और इसमें कितना पानी होना चाहिए? क्या परम पवित्र स्थान के प्रवेश द्वार पर पर्दा रखने के लिए एक स्तंभ चौकोर होना चाहिए, या गोल, या कुछ और? इस तरह के निर्णय उन पुरुषों के जोड़े पर छोड़ दिए जाएँगे जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं चुना और उस उद्देश्य के लिए अभिषेक किया। मुखिया बेतज़ेल होगा। वह हूर का पोता है, जो हारून का दूसरा कमांडर था। दिलचस्प बात यह है कि कोई सोच सकता है कि हारून ने अपने सहायक के रूप में एक बेटे, या कम से कम एक साथी लेवी को चुना होगा, लेकिन हूर, और इसलिए बेतज़ेल, यहूदा के गोत्र से थे। बेतज़ेल के नाम का अर्थ है, "एल की छाया में,'' या जैसा कि हम आमतौर पर सोचते हैं, "परमेश्वर की छाया'' में कितना उपयुक्त है।

अपने दूसरे कमांडर के रूप में, परमेश्वर ने बेतज़ेल को ओहोलियाव नाम का एक आदमी सौंपा, जिसका इब्रानी में मार्मिक अर्थ है "मेरे पिता के तम्बू'' में जो दान के गोत्र का था। ध्यान दें कि ये लोग 4 प्रमुख नेता कबिलाओं में से 2 का प्रतिनिधित्व करते हैं, यहूदा और दान और, हमें पद 6 में बताया गया है कि यहोवा ने अलौकिक रूप से इन दो पुरुषों के दिमाग में वह रखा जो वह चाहता था कि सब कुछ कैसा दिखे। अगर पवित्र आत्मा उनमें नहीं रहता तो उसने ऐसा कैसे किया? मुझे कोई जानकारी नहीं है लेकिन, अगर वह पवित्र आत्मा के बिना वास्तव में उनके भीतर रहने के बिना ऐसा कर सकता है, केवल उन पर आराम कर रहा है, तो कल्पना करें कि हमारे लिए, विश्वासियों के रूप में, कितना बड़ा लाभ है कि परमेश्वर की आत्मा हमारे अंदर रहती है

पद 12 में यहोवा मूसा को निर्देश देता है कि वह लोगों को सब्त के महत्वपूर्ण स्वरूप की याद दिलाए। पद 13 में, जहाँ अधिकांश बाइबिलें कहती हैं कि हालाँकि, या "फिर भी", या "तुम मेरे सब्त का पालन करोगे", वहाँ अनुवादित इब्रानी शब्द "अख" है। "हालाँकि" या "तुम करोगे" के अलावा कोई अन्य अनुवाद जो हमारे अमेरिकी मानसिकता में इसके अर्थ को बेहतर ढंग से पकड़ता

है, वह हो सकता है "सबसे ऊपर" अर्थात, यह यहोवा की ओर से एक अनुस्मारक है कि तम्बू और वेदियों के निर्माण और पुजारियों के वस्त्र और औजारों आदि के निर्माण में होने वाली सभी व्यस्तताओं में, सब्त के पालन से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।

इस खंड में यह स्पष्ट है कि सब्त कानून का पालन करने का औचित्य इतना नहीं है कि यह मूसा की वाचा से जुड़ा है; बल्कि यह सृष्टि से जुड़ा है। यह उत्पत्ति की सृष्टि कथा है जहाँ हम पाते हैं कि प्रभु अपने रचनात्मक कार्य को समाप्त करते हैं और फिर अगले दिन को पवित्र के रूप में अलग करने की घोषणा करते हैं।

उत्पत्ति 2:1 इस प्रकार आकाश और पृथ्वी और उनके सारे दल का निर्माण पूरा हो गया। 2 और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था, सातवें दिन पूरा किया, और उसने अपने सारे काम से जो उसने किया था, सातवें दिन विश्राम किया। 3 तब परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया, क्योंकि उसमें उसने अपनी सृष्टि की और बनाए हुए सारे काम से विश्राम किया।

यहाँ विचार यह है कि परमेश्वर ने अपनी रचनात्मक गतिविधि के विराम का जश्न मनाने के लिए एक दिन निर्धारित किया है, और उत्सव का स्वरूप मनुष्यों द्वारा अपने सामान्य कार्य, अपनी रचनात्मक गतिविधि को रोकना है, लेकिन ऐसा नहीं है कि प्रभु ने यहाँ, माउंट सिनाई पर सब्त का दिन बनाने या इसे केवल इस्राएल के लिए कुछ बनाने में कुछ नया निर्धारित किया है। बल्कि, वह कहता है, "तुम्हें मेरे सब्त का पालन करना चाहिए।'' दूसरे शब्दों में, सब्त का दिन बहुत समय पहले सभी मनुष्यों द्वारा पालन करने के लिए बनाया गया था, लेकिन जाहिर है कि मनुष्यों ने सब्त पर ध्यान देना छोड़ दिया है। इसलिए प्रभु कहते हैं, इस्राएल, तुम्हें इसका पालन करना चाहिए क्योंकि तुम मेरे लिए अलग किए गए लोग हो। इसलिए तुम लोगों के लिए 7वें दिन क्या करना चाहिए, इसका उदाहरण बनोगे। सब्त और यह उनकी सामान्य गतिविधियों से आराम करना है, और इसके बजाय अपने परिवार के साथ रहकर प्रभु की आराधना करें।

मैं शनिवार को सब्त तथा रविवार को प्रभु का दिन होने के बारे में अपनी बात नहीं दोहराऊँगा, क्योंकि यह केवल ऐतिहासिक तथ्य है। बल्कि मैं यह बताना चाहूँगा कि इस पवित्रशास्त्रीय अंश का अर्थ कुछ इस प्रकार हैः "जब आप अपना निर्माण कार्यक्रम शुरू करते हैं, तो मुझे या मेरे आदेशों को न भूलें।'' यह कितना मानवीय है कि हमें कुछ करने के लिए परमेश्वर से बुलावा मिलता है और हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं और खुशी–खुशी जानते हैं कि हमारा एक दिव्य उद्देश्य है और फिर हम अपने जुनून को बेलगाम होने देते हैं। हम परमेश्वर के सिद्धांतों

और आदेशों के बारे में सब भूल जाते हैं, जैसे कि उन्हें सिर्फ़ हमारे लिए ही निलंबित कर दिया गया हो, क्योंकि हमारा प्रोजेक्ट इतना महत्वपूर्ण है कि यह उनके नियमों और आदेशों से परे है। मैंने चर्चों में निर्माण दल को अपने निर्माण प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए सप्ताह में 7 दिन काम करते देखा है, क्योंकि अपने लक्ष्य के करीब पहुँचने के उत्साह के कारण मैंने पुरुषों और महिलाओं को अपने सेवकाईयों को पूरा करने के नाम पर अपने जीवनसाथी या बच्चों की उपेक्षा करते देखा है। मैंने ऐसे सेवकाई देखे हैं जो हर दिन जितना संभव हो सके उतना उत्पादन करने पर इतने आमादा थे, हर मिनट को महत्वपूर्ण बना रहे थे, कि प्रार्थना लगभग भूल ही गई थी। और, हमारे समय और युग में, मैं अक्सर ऐसे सेवकाई देखता हूँ जो, ऐसा प्रतीत होता है, पैसे जुटाने के अलावा कुछ नहीं करते, दिन में 24 घंटे, सप्ताह में 7 दिन, वर्ष में 365 दिन, भव्य मानवीय उद्यमों की श्रृंखला में अगला कदम, जो परमेश्वर को एक विपणन उपकरण से अधिक कुछ नहीं बनाता।

मुझे यह सबसे अधिक शिक्षाप्रद लगता है कि परमेश्वर ने अब जो सभी सिद्धांत और पालन निर्धारित किए हैं, उनमें से उसने मूसा को सब कुछ से ऊपर सब्त को रखने का आदेश दिया है, और, फिर भी, यहाँ हमारे समय में, अधिकांश विश्वासी दावा कर रहे हैं कि सेंट संत पौलुस ने हमें निर्देश दिया है कि सब्त एक अप्रचलित और बेकार पालन है, या हमें इसे बदलने की छूट दी गई है जो हमारे लिए सबसे सुविधाजनक है। और, यह विचार कहाँ से आता है? यह है कि पुराना नियम पुराना है, और नया नियम नया है इसलिए नया पुराने की जगह लेता है। इस बात पर ध्यान न दें कि माउंट पर उपदेश में यीशु ने बिल्कुल विपरीत कहा, कि एक भी अक्षर या शीर्षक, एक भी छोटी सी बात तोरह से तब तक नहीं गुजरेगी जब तक कि स्वर्ग और पृथ्वी समाप्त नहीं हो जाती, और सब्त से अधिक तोरह के लिए कोई और केंद्रीय शिक्षा नहीं हो सकती

और, नहीं, हम इस सब्त के मुद्दे से बाहर नहीं निकल सकते हैं क्योंकि परमेश्वर कहता है कि सब्त **इस्राएल** और उसके बीच एक शाश्वत वाचा है क्योंकि नए नियम में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जब हम मसीहा यीशुआ को स्वीकार करते हैं, तो हम सच्चे इस्राएल नामक समूह का हिस्सा बन जाते हैं, हम अब्राहम के आत्मिक बीज बन जाते हैं। हम इस्राएल की वाचाओं और उनकी सभी आशीषों और दायित्वों से सबसे वास्तविक तरीके से जुड़ जाते हैं, आत्मिक रूप से। ये मेरे शब्द नहीं हैं, बल्कि सीधे, स्पष्ट रूप से और शाब्दिक रूप से पवित्रशास्त्र से हैं जैसा कि मैंने आपको कई अवसरों पर दिखाया है।

हम अगले सप्ताह अध्याय 31 के साथ समाप्त करेंगे।